धर्म का स्वरूप

आधुनिक अमेरिका में

लेखक

हर्बट डब्ल्यू स्नेडर





ग्रथ-सख्या	२३५
प्रथम सस्करण	सवत २०२०
प्रकाशक तथा विक्रेता	भारती भडार लीडर प्रेस, इलाहाबाद
मूल्य	५ ०० न प
मुद्रक	श्री बी पी ठाकुर लीडर प्रेस, इलाहाबाद

अनुक्रम

क्रान्तिकारी युग मे धर्म

विश्राम-दिवस का रूपान्तरण

मुझे वह दिन याद है जब मेरे गाँव की मुख्य सड़क पर मोटरगाड़ी दिखाई दी थी क्योंकि मेरा जन्म वर्तमान शताब्दी के शुरू होने के कुछ पहले हो चुका था। मेरा गाँव एक आम कस्बे से भौगोलिक या सांस्कृतिक दृष्टि से बहुत दूर नहीं है। मुझे वह दिन भी स्मरण है जब शहर में पहली बार फिल्म दिखाई गई थी। उन दिनों हमारे शहर में लोग रंगमंच के काफी खिलाफ थे क्योंकि यह व्यर्थ का तमाशा गिर्जाघर की प्रार्थना से अधिक मनोरंजक था और यद्यपि यह उतना 'ईश्वर विरोधी' कृत्य नहीं था जितने कि बेकार के नाच-तमाशे, शराबखोरी, जुएबाजी और ताशबाजी थे, फिर भी यह 'सांसारिक' बात तो थी ही और इसलिये दमपूर्ण थी। उस गाँव के जीवन में, शक्ति के उत्पादक, शिक्षणात्मक एवं रचनात्मक उपयोग तथा दूसरी ओर खेल-तमाशा और उत्तेजना के उन विविध रूपों में जो प्रलोभक थे और जीवन के गंभीर व्यापार से ध्यान खींचने वाले थे, एक आधारभूत नैतिक भेद किया जाता था। न तो हमारी धार्मिक और न शैक्षिक संस्थाएँ प्रलोभक थीं या होना चाहती थीं। ये गंभीर विषय की चीजें थीं, शिक्षा इसलिए गंभीर थी कि वह उत्पादक थी, धर्म इसलिए गंभीर था कि वह गंभीरता पैदा करता था।

जब शहर में फिल्म और मोटरगाड़ियाँ आयीं तो उनसे बड़ी सनसनी फैली। पहले तो इन चीजों को किसी ने गंभीरता से न लिया, पर उनकी निन्दा करने से भी कोई लाभ न था। उस समय तो वे चीजें बिल्कुल निर्दोष

मालूम पडती थी । यद्यपि कुछ बडे विचारशील दूरदर्शियो को उनका परिणाम व्यापार नैतिकता, शिक्षा और धम पर क्या होगा, यह दिखाई दे रहा था, पर अधिकाश लोगो ने तो उन्हे केवल अनिवाय समझकर ही स्वीकार कर लिया ।

आयोवा के धार्मिक, साम्प्रदायिक गाँव अमाना जैसे कुछ स्थान ऐसे भी थे जिन्होने साफ-साफ और जल्दी ही देख लिया था कि वहाँ के युवक शीघ्र ही फिल्मो को गिर्जाघर की प्राथना की अपेक्षा अधिक गभीरता से लेने लगेंगे इसलिए उन्होने अपने समाज मे सिनेमा का प्रवेश ही नही होने दिया। बीस-तीस वष तक ये धार्मिक भक्त लोग अपने नवयुवको को सिनेमा वाले शहरो की ओर जाते हुए मजबूर से देखते रहे । पुरानी पीढी ने इस प्रकार सिनेमा के विरुद्ध अत तक बनाये रखा । लेकिन अधिकाश धार्मिक अमरीकियो ने अपनी अचेतन सामान्य बुद्धि से फिल्मो और मोटरो को या तो भोलेपन से या निर्विकार भाव से स्वीकार कर लिया । यही बात हाल मे रविवासरीय पत्रो किस्से कहानियो जाँज-सगीत (और उसके परिणाम) हवाई जहाज, रेडियो और टेलिविजन के शीघ्रतापूण प्रसार के बारे मे भी कही जा सकती है । धार्मिक लोगो ने अवश्य ही उनके विरुद्ध छुटपुट या सगठित रूप से विरोध, भय या घणा का प्रदशन किया । पर कुल मिलाकर बीसवी शताब्दी के इन आविष्कारो ने अमरीका के जन जीवन के ढग, आदश और रुचियो मे इतनी तेजी से क्राति ला दी कि लोग यह नही जान पाये कि नीति और धम पर इनके क्रातिकारी परिणाम क्या होगे ।

१९०५ मे इस शताब्दी के मोड पर एक बड़े उदार उपदेशक ने धम के परिवर्तित रूप और उसके शाश्वत सार के बारे मे ऐसी बातें कही थी जिनका व्यापक प्रसार हुआ

१७९४ ई० मे जब मेरे पिता का जन्म हुआ था तो कोई भी जीवित मनुष्य अब्राहम से अधिक तेज यात्रा नहीं कर सकता था । ये आश्चय जनक परिवतन उसके बाद आये हैं परन्तु चार, छ या दस मील प्रति

घंटे के बजाय मुझे ५० मील प्रति घंटे का सफर क्यों करना चाहिए ? माना कि यह एक बड़ी सुविधा है, पर यह कोई जरूरी नहीं है कि मैं एक अच्छा ही आदमी होऊँ, और जिस संदेश को लेकर मैं दौड़ता हूँ वे शायद ऐसे जरूरी, दयालुतापूर्ण, न्याययुक्त एवं मानवोचित न हों। हमारी सभ्यता इस पर निर्भर है कि हम क्या हैं न कि हम क्या करते हैं या उसे कितनी तेजी और आश्चर्यजनक ढंग से करते हैं।

यद्यपि हम डा० सैंवेज की पुरानी सभ्यता और आत्मसंतोषी नैतिकताओं पर मुस्करा सकते हैं पर हम स्वयं अपनी कथनी और करनी में अंतर रखकर उसी प्रकार के नैतिक उपदेश देने में तत्पर रहते हैं। तेज गति का न्याय से अथवा सस्ते मनोरंजन का दयालुता से भला क्या संबंध हो सकता है ? आज भी ऐसे धार्मिक नेता हैं जो शुद्ध धर्मनिरपेक्ष आविष्कारों के प्रति उपेक्षा का दावा करते हैं और जो यह भी सोचते हैं कि बुनियादी तौर पर तब से अब तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। यह सच है कि ये आविष्कार अपने आप में भौतिक और बाह्य चीजें अथवा साधनमात्र हैं पर अब हर एक इस बात को जान गया है कि अपने परिणामस्वरूप इन आविष्कारों ने न केवल हमारे विचार प्रकाशन के ढंग में परिवर्तन ला दिया है बल्कि इसमें भी कि हम क्या सोचते हैं और करते हैं। इन नये आविष्कारों के द्वारा दिये गये नये अवसरों और दिशाओं में हमारी रुचियों के विस्तार में क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया है।

इन आविष्कारों ने अमरीकी संस्कृति में जो आम क्रान्ति ला दी है मैं उसका वर्णन नहीं करूँगा, क्योंकि उसके तथ्य सभी को मालूम हैं। साथ ही मैं यह भी याद नहीं दिलाऊँगा कि इन आविष्कारों से पहले जीवन कैसा था क्योंकि हो सकता है कि मैं 'सादे जीवन' की ही प्रशंसा करने लग जाऊँ। संभवतः मैं अपने मित्र जार्ज हैरालिसन के इस कथन से सहमत हूँ कि हम बहुत-सी अच्छी चीजों की लालसा में पड़कर अच्छाई से प्रेम करना खो बैठे हैं। जब हम पर लगातार नये और अच्छे अवसरों द्वारा अपनी बची हुई क्रय शक्ति का उपयोग करने के लिए जोर डाला

जाता है तो यह पूछना असामयिक प्रतीत होता है कि हम वास्तव म अद्यतन रहना चाहते हैं या नहीं, क्योंकि सम सामयिक सभ्यता की उपेक्षा करके कोई सभ्य कैसे हो सकता है ? किंतु जब वस्तुओं के लिए होने वाली भाग दौड हमारा ध्यान स्थायी मतोष से हटाकर अपनी ओर आकर्षित करती है तो हम पीछे देखते है और उस जमाने को सादगी का ही आदर्श मानने लगते हैं। अधिकांश नतिक उपदेशों की यही करुण कहानी है। हम सोचते रहते है कि शाश्वत या सत्य सत्ता की प्राप्ति हम, जहां हम हैं उसके बजाय कहीं और होगी और साथ ही कि हमारी चेतना इतनी भटकी हुई नहीं है जितनी कि हमारी वस्तुतें। किंतु यहां हमारा इरादा नतिक उपदेश देना नहीं है। म तो केवल यह बता रहा हूं कि किस प्रकार हमारे धम और नित्यता के प्यार पर हमारे समय के दबाव का प्रभाव पड़ा है।

प्रारभ म मैंने इस शताब्दी के बहुत ही आम परिवतनों पर जोर दिया है क्योंकि अकेले उनसे ही धम म क्रांति आ गयी होती। लेकिन ये परिवतन तो हमारे मनो म आये हुए उसी प्रकार के परिवतनों नयी खोजो, नये इतिहास, नये आदर्शों और बदली हुई दार्शनिक विचार-धाराओं के परिणाम थे। आत्मा की इन आतरिक हलचलों और धम पर उसके प्रभाव का वणन अगले अध्यायों म किया जाएगा। यहां पर हम केवल यह विचार करेंगे कि इन तकनीकी और आर्थिक क्रांतियों का धम पर क्या प्रभाव पड़ा ?

प्रारभ हम चच म हाजिरी देने सबाथ मनाने आदि धम के बाह्य रूपों से करेंगे। १८०० और १७०० की तरह १९०० म भी धार्मिक अमरीकी पदल या गाडियों म चलकर सप्ताह म कई बार धमस्थानों म पहुँचते थे। गिर्जाघर समुदाय का केन्द्र हुआ करता था और स्थानीय धम-सस्था ही धार्मिक गतिविधियों का केन्द्र हुआ करती थी। छोटे-से गांव म भी दो-तीन धमस्थान आसपास ही हुआ करते थे। परन्तु इस पथ-वाद या धार्मिक विविधता ने धमस्थान या प्रार्थनाघर के सामुदायिक केंद्र

के रूप का विनाश नहीं किया। न्यू इंग्लैण्ड में भी जहां का 'सभा भवन' नगर की एकता का प्रतीक माना जाता था प्रोटेस्टेंट रोमन क्योलिक तथा अन्य चर्च दिव्य यश के भवन होने के साथ-साथ समुदायके सदस्यों के मिलने के स्थान भी बने रहे। इस प्रकार गांव समुदायों का पड़ोस होता था। पास-पड़ोस के लोग विभिन्न धर्मस्थानों को जाते थे, पर उनका व्यवहार एक-सा ही रहता था। चार हजार की आबादी के मेरे गांव में सात गिरजाघर थे और ग्रामवासी विभिन्न धर्मों के अनुयायी होते हुए भी परस्पर उन सब से एक आत्मिक समुदाय का लगाव अनुभव करते थे। यह लगाव वे उन लोगों के साथ अनुभव नहीं करते थे जो किसी भी चर्च में नहीं जाते थे। शहर और गांव में इस प्रकार के बहुधर्मी समुदाय लोगों रूपी पड़ोसियों के समूह से बनते थे जिनकी परस्पर एक-दूसरे को जानने में सच्ची दिलचस्पी थी। जब वे लोग सभा में जाते या कहीं और मिलते तो उनमें वास्तव में एक समाज बनता था। 'सामूहिक पूजा' केवल पूजा न होकर परस्पर का सम्मिलन भी होती थी। सप्ताह भर तो ये पड़ोसी अपने अपने कामों में व्यस्त रहते थे पर रविवार के दिन वे व्यक्तिगत काम छोड़कर, वे वह चीज पसन्द करते थे जिसे आजकल की व्यापारिक भाषा में सामाजिक संबंध कहते हैं। सप्ताह में एक सभा अपर्याप्त समझी जाती थी। रविवार को सुबह तथा शाम की प्रार्थनाएँ नियम से होती थीं, साथ ही रविवासरीय विद्यालय तथा नवयुवकों की सभाएँ भी होती थीं। सप्ताह के शेष दिनों में प्रतिदिन एक सामान्य प्रार्थना समितियों की सभाएँ तथा समूह-गान का अभ्यास होता था। लोगों के अवकाश का काफी भाग धर्म कार्यों में व्यतीत होता था। रविवार को समाज में जाने के अलावा भी आम तौर से लोग मिलनसार बन कर रहते थे। इसके सिवाय रविवार या अवकाश के दिन सार्वजनिक रूप में उपस्थित होना सामाजिक और गम्भीरता का परिपालन समझा जाता था। शोरगुल के खेल और प्रतिस्पर्धाओं से लोग बचते थे। घूमने फिरने लोगों के घर जाने पढ़ने और संगीत-साधना में धर्म-साधना से बचा समय लग जाता था। इन सब

क्रिया कलापो मे एकरूपता नही होती थी किंतु किसी न किसी रूप म सप्ताह म यह एक दिन या तो धार्मिक कृत्या म लगता या पारिवारिक सामाजिक कार्यों म। कथोलिका म भी जो यूराप मे सैंबाथ कम मनाते थे, यह रिवाज शीघ्र प्रचलित हो गया।

सामाय नियम यह था कि रविवार के दिन आत्मा-सबधी काम होते थे। उस दिन के धार्मिक कृत्य ससार से इस अलगाव म अग मात्र ही होते थे। राजनीति खेल तथा व्यापार सभी सासारिक मामले माने जाते थे। रविवार के काय अव्यावहारिक तथा व्यस्त जीवन की चिताओ स मुक्त होते थे। आत्मा का पुनर्निर्माण तथा उसे ऊँचा उठाना ही ईश्वर की शाति का उद्देश्य होता था और इस उद्देश्य की प्राप्ति मे वही गभीरता बरती जाती थी जो कि सासारिक मामला म। उस दिन कोई बेकार का मनोरजन या खेल नहीं होता था।

धम-पालन के इस प्रकार के सामुदायिक रीति रवाजा के बीच ऊपर कहे गए आविष्कार प्रकट हुए। पर भिन भिन समुदायो म वे असमान शक्ति स आये। आइए पहले हम उन परिशो के रूपातरण पर विचार करें जहाँ कि बीसवी सदी के परिवतना का पूरा-पूरा प्रभाव पडा है। ऐसे परिश सारे देश म शहर तथा गाव दोना म पाये जाते हैं कुछ महत्त्वपूण क्षेत्रीय अतर भी हैं जिन पर हम बाद मे विचार करेंगे पर इन बुनियादी परिवतनो ने आबादी के सभी भागा पर प्रभाव डाला है। इसलिए किसी भी भौगोलिक क्षेत्र म बहुत बडे बडे अतर पाये जा सकते हैं पर ये अतर वर्गों के अतर नही है।

घरेलू अनीश्वरवाद के चरम सीमा के प्रकार

केवल बहुत ही उग्र आर्थिक मामले धार्मिक रूप म महत्त्वपूण हैं। जो लोग मोटर, रेडियो और अन्य ऐसी चीजें नहीं खरीद सकते जिन्हें हम सुविधा का दृष्टि से पुराने धार्मिक शब्दों म सासारिक आवश्यकता की वस्तुएँ कहेंगे वे उन लोगो से अलग दिखाई दे जाते है जो उन्ह खरीद सकते है और खरी-

दने हैं। आम तौर पर ये विभिन्न वस्तुएँ साथ साथ चलती हैं। जो लोग मानते हैं कि वे इन्हें खरीद सकते हैं वे यह भी विश्वास करते हैं कि ये सभी आधुनिक आवश्यकता की चीजें हैं। जो लोग सचमुच गरीब हैं और जो सभ्यता की आवश्यक वस्तुएँ नहीं खरीद सकते वे गृह मिशन सहायता-काय या सगठित धार्मिक सदान के पात्र बन जाते हैं चाहे उन्हें सामाजिक सुधार की आवश्यकता हो या न हो। उन पर दया की जाती है—उन्हें धर्म-स्थानो म आमन्त्रित किया जाता है पर उन्हें ऐसा महसूस करने के लिए विवश किया जाता है (जसे कि वे इस हालत म अनुभव करते ही हैं) कि वे धार्मिक समुदाय के उसी अथ म नहीं हैं जिस अथ म अधिक धनवान लोग हैं। यह धार्मिक दरिद्रवग सदा से अस्तित्व म रहा है वह न शहरी है न ग्रामीण और न है आधुनिक—वह तो विश्वव्यापी है। पर बीसवीं सदी के अमरीकी जीवन-स्तर के कारण धनी और निधन के बीच का सास्कृतिक अतर बहुत घट गया है। जिन लोगों के पास बिल्कुल कुछ भी नहीं है और जिन्हें आधुनिक आविष्कारों के बुनियादी सास्कृतिक विशेषाधिकार प्राप्त नहीं हैं उन्हें न तो परपरागत धम म भविष्य बनाने की आशा है और न क्रांतिकारी राजनीति म। सिवाय ऐसी विशेष हालतों के, जसी कि उन नीग्रो-समुदायों की है, जहाँ दासता नाम मात्र के लिए रह गयी है ये लोग न तो कभी अपना धम-स्थान बना पाते हैं और न धर्म से उनकी कोई प्रत्यक्ष दिलचस्पी ही हो पाती है। दरिद्र गोरे लोग तो नीग्रो लोगों की अपेक्षा अवश्य ही कम धार्मिक होते हैं और मिशनरियों को उनकी चिन्ता भी अधिक होती है। इन बहुत ही ज्यादा दलित वर्गों को घरेलू अनीश्वरवादी कहा जा सकता है पर उनकी अनीश्वरवादिता श्रद्धा की कमी के कारण उतनी नहीं है जितनी कि विशेषाधिकारों की कमी के कारण। यद्यपि ऐसे लोगों के सुधार की आशा कभी नहीं छोड़ी जाती तो भी धार्मिक दृष्टि से उनका समुदाय विजातीय ही माना जाता है। शहर और गाँव दोनों के ही जीवन म वे बराबर अलग ठिठक जाते हैं और अपने सभ्य पड़ोसियों की

दृष्टि मे उनका महत्व उतना ही कम होता है। सौभाग्य स इस सदा म अब तक ऐसे लागा का वग' अपेक्षाकृत छोटा रहा है।

सामाजिक पमाने के दूसरे छोर पर कराडपति लाग है। वे भा सगठित घम के क्षेत्र के वाहर ह। वे खरात के पात्र नही है, लकिन उनकी दृष्टि म वाकी सव नश्वर मनुष्य इसक पात्र हैं। व धार्मिक सस्थाआ के देवदूत या सरक्षक होते है लेकिन आम तौर पर उस सस्था से अपने आप को ऊँचा अनुभव करते हैं। उनके लिए व आधुनिक आवि ष्कार जिनके वारे म हम विचार कर रह है केवल आकस्मिक सुविधाएँ हैं। इनकी वजह से उनके स्तर म कोइ वडा परिवतन नहा आता क्याकि उनकी रुचियाँ सासारिक होते हुए भी आम लोगा की पहुँच क परे हाती हैं। ऐसे लोग स्कूल और अस्पताला की तरह प्राथना-स्थाना म भी परापकारी रुचि दिखाते ह क्याकि उनका निगाह म वे उपयागी काम कर रहे होते हैं। गिरजाघर म वे कभी-कभी एस हा जाते ह जस किसी अस्प ताल मे, या तो परोपकार क कारण या फिर वहुत जरूरतमद मरीज के तौर पर। एण्ड्रयू कार्नेगी जैसे, जा चच के वजाय पुस्तकालयो का अधिक सामाजिक तथा हितकारी मानना था परोपकारी लोगा का सख्या वास्तव म बहुत कम है। एक सघ तो फिर भी अपने विवेक से काम ले सकता है लेकिन एक गरपेशेवर परापकारी ता क्या उपयोगी है और क्या नही, इस वारे म सव साधारण का दृष्टिकोण ही स्वीकार कर लेता है। कुल मिलाकर उसकी दृष्टि स सामाजिक सहायता कोश की स्थापना हाल का सबसे वडा आविष्कार है क्याकि इसकी वजह स वह अनेक छोटी मोटी चिताआ स मुक्त हो जाता है।

बहुत घनी यक्ति जब धार्मिक कार्यों म पूरी तरह (सरक्षक के तौर पर नही) लगता भी है ता ज्यादा सभावना यहा रहती है कि वह किसी धार्मिक समुदाय क जीवन म भाग लेने के वजाय उस काम को वह अपने अकेले ढग से करेगा। रहस्यवाद, अनासक्त शातिवाद, घम विज्ञान, ब्रह्मविज्ञान, तथा आध्यात्मिक निष्पदन के रूप म अमरीकी पादरियो को

अकेले या विशिष्ट मण्डली में एकांत-साधना की कला का अभ्यास करने के विविध अवसर मिल जाते हैं। धनियों के बीच इस प्रकार का धार्मिक व्यक्तिवाद कोई नया चीज नहीं है इसलिए बीसवीं सदी की धार्मिक विशेषताओं का अध्ययन करते हुए हम इन पर रुकने की आवश्यकता नहीं। इस बात के कुछ सबूत हैं कि धनी अमरीकी उन्नीसवीं सदी की अपेक्षा बीसवीं सदी में कम धार्मिक हैं, लेकिन यह कहना कठिन है कि यह प्रवृत्ति आधुनिक टेक्नालाजी के कारण ही है। किन्हीं विशेष प्रकार के धार्मिक विश्वासों के कारण तो यह प्रवृत्ति और भी कम है। धनी लोगों के धार्मिक विश्वास होते ही इतने बहुरंगी और अनिश्चित हैं कि उनका विशेष विश्लेषण करने से कोई लाभ नहीं है। एक धनी परोपकारी की अंतरात्मा जैसी होती है उसका वर्णन एण्ड्रयू कार्नेगी ने अपनी पुस्तक 'सम्पत्ति का सन्देश' में किया है। लेकिन सम्पत्ति का यह सन्देश जो आज भी कार्नेगी के दिनों के जैसा है, धनी व्यक्ति का धर्म नहीं, यह उसकी 'अंतरात्मा' ही है। उसका धर्म अधिकतर बहुत व्यक्तिगत, कुछ परम्परा भिन्न और पूरी तरह अव्यावहारिक होता है।

आधुनिक शहरी चर्च

धार्मिक संघ या समुदायों की ओर अर्थात उन लोगों की ओर जिन्हें कि परंपरागत रूप से धार्मिक कहा जाता है, आते हुए पहले हम बड़े शहरी चर्चों पर दृष्टि डालेंगे। इन चर्चों के सदस्य व्यक्तिगत रूप में समृद्धिशाली हैं तथा सांस्कृतिक दृष्टि से आधुनिक हैं लेकिन वंश-परंपरा या पारिवारिक पृष्ठभूमि की वजह से वे अपने और अपने बुजुर्गों के रहन-सहन में अंतर के प्रति सदा सजग रहते हैं। इसीलिए ये लोग बीसवीं सदी में धार्मिक दृष्टि में जो कुछ बना (या बिगड़ा) है उसका अध्ययन करने के लिए अच्छे उदाहरण हैं। ये चर्च बड़े हैं क्योंकि इनके सदस्य प्रार्थना के लिए दूर से भी आम तौर पर कार द्वारा आ सकते हैं। एक टिपिकल शहरी चर्च यद्यपि गृह मिशन' के रूप में निकटवर्ती

भौगोलिक पडोस की सेवा कर सकता है, फिर भी उसके सदस्य दूर दूर के रिहायशी भागा और उपनगरा के होते हैं। इसी प्रकार के एक गाँव के चच के सदस्य न कवल पास के कस्बे के धनी व्यक्ति बनेंगे बल्कि मीलो दूर के सपन्न किसान भी। ऐसे चच सामुदायिक सगठना के बजाय सभा या सघ ही ज्यादा होते हैं। स्थानीय के बजाय उनका रूप केन्द्रीय अधिक हाता है और इस तरह से आपस मे अपरिचित सदस्य चच के काम के लिए इकट्ठे हो जाते हैं। चच किसी स्थानीय समाज का नहा होता। यह कुछ ऐसे व्यक्तियो का विशेष सगठन बना देता है जो किसी और ढग से समूह नहीं कहला सकते। ऐसी सदस्यता भौगोलिक दृष्टि से तो बिखरी होती ही है साथ ही लचकीली और अस्थिर भी हाती है इसलिए चच म इसका दिलचस्पी भी इतनी तीव्र नहा होती। परिणामत चच के कार्यों को चलाने के लिए अधिक बडी सदस्यता की आवश्यकता होती है। इन हालतो म सगठन तथा उसकी सम्स्यता का विस्तत करने का एक स्वाभाविक आर्थिक कारण रहता है और ज्या-ज्या एसा चच बडा हाता जाता है त्या त्यो इसम आकस्मिक तथा भाग न लेने वाले लागा की हाजिरी बढती जाती है। छाट स्थानीय परिशा या मण्डला को प्रात्साहित किया जाता है कि वे धार्मिक सीमा के अदर तथा उसक बाहर भी अपने आपको अधिक मजबूत बनायें। और यह कहना कठिन है कि पादरिया की जिस कमी की अधिकतर चच शिकायत करत हैं वह इन प्रवत्तिया का कारण है या उसका परिणाम। जो भी हो आधुनिक हालता म सख्या म कम लेकिन आकार म बडे चच उसकी बजाय ज्यादा काम कर रहे हैं जितना कि छाटे स्थानीय मडला द्वारा किया जाता था।

इसके साथ ही-साथ साधारण सासारिक कसौटी के अनुसार चच की प्राथना तथा सेवा के स्तर म भी सुधार हु आ है। अब पहलेवर प्रशिक्षित अधिक वेतन पाने वाले पादरिया और कमचारिया की सख्या पहले से अधिक है। हर चच में एक स्टाफ पर नियुक्त पादरी उसका सहायक वेतन पाने वाले गायक, शिक्षा कमचारी तथा सामाजिक कायकर्त्ता

आदि होते हैं। चच ने सस्था का रूप ले लिया है और इसका बजट पहले से बहुत अधिक बढ गया है। पहले से अधिक सदस्य जिनमें से हरेक के पास क्य मार हैं, पहले के से ज्यादा कुशल सेवा (सर्विस) के लिए खच करते हैं। हालांकि वेतन पाने वाले कायकर्त्ता समाज के काम म भाग लेने के लिए सदस्यों को लगातार प्रोत्साहित करते हैं, उनका सह-योग ज्यादा और ज्यादा आर्थिक ही होता जाता है। सामूहिक प्राथना म उनका भाग लेना भी अधिक निष्क्रिय हो जाता है। कुछ समय बाद तो लोग गिर्जाघर की प्रायना में भाग लने इसी ढग से आते हैं माना वे सगीत-गोष्ठी या नाटक म आ रहे हो। प्रायना अब लोक-कला के सामूहिक प्रका-शन के बजाय एक व्यावसायिक क्रिया हो गयी है। मिनिस्टर या पुरोहित पर पहले से ज्यादा जिम्मेवारी रहती है। उससे व्यावसायिक क्रिया-कलाप के स्तर की तथा नेतत्व के क्षेत्र म अधिक कुशलता और काय की *आशा की जाती है। साहित्य, नाटक सगीत स्थापत्य तथा अय कलाओं* म आलोचनात्मक निणय के विस्तार के साथ चच का भी बाकी कलाओ के साथ सौंदर्यात्मक मुकाबले म उतरने के लिए बाधित होना पडा है। अब बेढगी भद्दी स्वाभाविक प्राथनाएँ स्वीकार नही की जाती। इस प्रकार धमनिरपेक्ष कलाओ ने धार्मिक नेतृत्व पर भी सुरुचि के सख्त मान-दड लागू कर दिये हैं।

धनी सगठनो तथा उनके पादरी-नेताओ द्वारा कायम किये गये स्तर का प्रभाव निम्न मध्यम वग पर भी पडता है। उनके चर्चों का स्तर भी ऊपर से कायम होता है। मुकाबले के दबाव का अनुभव उन्हे भी होता है। क्योंकि यद्यपि सामान्य व्यक्ति की रुचि आलोचनात्मक नहीं होती, फिर भी, साधारण नागरिक देखता ही है कि आधुनिक आविष्कारो से कुशलता बढ़ जाती है और यदि वह आधुनिक नेतृत्व की नकल या अनु-सरण नहीं करता तो बिना नये मानदडो को समझे ही वह अनुभव करने लगता है कि वह खुद पिछड गया है या स्तर से नीचे है। मानदड का स्तर ज्यो ज्यो ऊँचा होता जाता है त्यो त्यो गिरिजाघर और पूँजियाँ

को संगठित करने की प्रेरणा अधिक होती जाती है। साम्प्रदायिक बंधन शिथिल पड़ जाते हैं। परिणामस्वरूप बहुत शिक्षित और आलोचनाशील समुदायों द्वारा चलायी हुई प्रवृत्तियाँ आम कस्बों के लिए आदर्श बन जाती हैं।

इन ज्यादा बड़े, अच्छे और संख्या में कम चर्चों में हाज़िरी के तरीकों में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आ जाता है। सप्ताह में एक बार कार में चर्च जाना अब 'नियमित हाज़िरी माना जाता है। एक औसत सदस्य के समय और शक्ति का बहुत कम भाग अब चर्च की गतिविधियों में लगता है। सप्ताह के बीच में औसत व्यापारी और कर्मचारी (यहाँ तक कि किसान भी) १९०० ई० के बजाय आज सामाजिक जीवन से कम अलग रहता है। फैक्टरियों के लोग पहले से ज्यादा मिलनसार हैं। उत्पादन संस्था के रूप में होता है और आर्थिक गतिविधियाँ सामाजिक मामलों के अधिक निकट हैं। अवकाश का समय अधिक सामाजिक तरीकों में खर्च होता है। इस लिए रविवार को सामाजिक रूप से बिताने की माँग भी कम है। उस दिन घर पर रहने पिकनिक पर जाने या किसी और प्रकार से एकांत पाने की ओर प्रवृत्ति अधिक है। और ज्यों-ज्यों, खास कर शहरों में शनिवार की संध्या तथा रात्रि को (जॉज़-संगीत नाच सिनेमा तथा नाटक के रूप में) तीव्र मनोविनोद बढ़ता जाता है त्यों-त्यों लोगों का झुकाव रविवार की सुबह आराम करने की ओर होता जाता है। अब तो सारे रविवार के ही सामाजिक उद्धार के बजाय विश्राम या सुस्ती में गुजारे जाने की संभावना रहती है। रविवासरीय पत्रों रेडियो और फिल्मों के द्वारा नपी-तुली मात्रा में उदात्त भावनाएँ पहुँचायी जाती हैं और एक औसत आदमी को उन्हें मनोरंजन के तौर पर स्वीकारने में कोई संकोच नहीं होता है। अभी शायद वह समय नहीं आया है जब निश्चय किया जा सके कि सामूहिक पूजा के तरीकों पर रेडियो और टेलीविजन का प्रभाव क्या पड़ेगा। लेकिन अभी से ही इस बात से कि रेडियो पर भी चर्च आराधना की जाती है और वह औसत दर्जे से अच्छी होती है यह पता

चलता है कि लोगों का झुकाव 'घर तथा एकांत में पूजा करने की ओर हो रहा है, बशर्ते उसे पूजा माना जा सके। इस तरह से ये आविष्कार परंपरागत पूजा के तरीकों और चर्च की गतिविधियों को यदि नुकसान नहीं पहुँचा रहे तो उन्हें बदल तो रहे ही हैं।

लेकिन परंपरागत धार्मिक रीति रिवाजों के लिए इस बाहरी खतरे की तुलना में धर्म के लिए अधिक महत्त्व की बात वे विभिन्न परिवर्तन हैं जो इन परिस्थितियों में आंतरिक रूप से धर्म में आ गये हैं। अधिक शिक्षित पादरी, अधिक धर्म निरपेक्ष प्रकार के उपदेश, बहुत ही धर्म-निरपेक्ष संध्या प्रार्थनाएँ (जो व्यवहारतः मनोरंजन ही होती हैं) नाटकीय प्रभाव, सामयिक कथा-साहित्य की समीक्षा, धर्म से असंबद्ध सामाजिक समस्याओं पर विचार विनिमय, बाइबिल विद्यालयों के स्थान पर हल्की-सी धार्मिक शिक्षा, और ज्यादा व्यापक धार्मिक प्रेम ये कुछ ऐसे परिवर्तन हैं जिन पर ध्यान दिया जा सकता है। बहुत-से सूक्ष्म रूपों में जिनकी विवेचना हम बाद में करेंगे, स्वयं धर्म ने आधुनिक जीवन के तरीकों को स्वीकार कर लिया है। अर्थात बहुत-सी ऐसी बातें जिन्हें १९०० ई० में सांसारिक माना जाता था आज के 'उदार' धर्म के पारम्परिक रूप में शामिल कर ली गयी हैं। और यहां मैं काई ब्रह्म विद्या के आधुनिकतावाद के बारे में बात नहीं कर रहा। मेरा मतलब है कि सिद्धांत और विश्वास में बड़े अंतर के अलावा भी, धर्मनिरपेक्ष जीवन की शक्तियों और आविष्कारों के साथ धार्मिक व्यवहार और गतिविधियों की ऐसी संगति बढ़ायी गयी है कि धर्म के व्यावहारिक अर्थ और उसके प्रभाव में क्रांतिकारी परिवर्तन आ गया है। चाहे या अनचाहे धार्मिक संस्थाओं को शुद्ध सांसारिक और प्रकट रूप से असंबद्ध आविष्कारों के दूर-व्यापी परिवर्तनों को स्वीकार करने और उनसे लाभ उठाने के लिए बाध्य होना पड़ा है।

हठीले धर्मों के प्रकार

अब धर्म के कम आधुनिक बने रूप पर विचार करते हुए हम उन

समुदाया और क्षेत्रा की ओर जाते हैं जिनके लिए आधुनिक जीवन के ब्राह्य परिवर्तना का धम के मूलतत्वा पर काई खास प्रभाव नही पडा है। अमरिका म तथाकथित निम्न मध्य वग आर्थिक दृष्टि स निम्न नही हैं—कम-से कम इतने नही हैं कि उन पर ध्यान जाय। उनके पास भी बुनियादी सासारिक वस्तुएँ हैं और उन्हे कुछ बुनियादी शिक्षा मिली हुई है। लेकिन उनके पास उस बुनियादी से ज्यादा शायद ही कुछ है और बुनियादी क्या है क्या नहीं इसका भाव भी उन्हे उत्तराधिकार म मिला होता है। वे जितने आराम से रह रहे हैं उतने आत्म सतापी भी है। *आज यह समव है बिना इस बात का जाने बीसवी सदी मे काई* क्रातिकारी बात हो गयी है कि कोई प्राथमिक और हाईस्कूल की शिक्षा या किसी कालेज द्वारा दी गयी हाईस्कूल की शिक्षा प्राप्त कर ले। और यह सभव है कि स्कूल म मिली शिक्षा म काइ वद्धि किये बिना बहुत स अखबारा पत्रा और पुस्तका को पढ लिया जाय। यह सोचना भी सभव है कि विज्ञान का मतलब केवल टैक्नोलाजी स है और टैक्नोलौजी का मतलब है केवल शारीरिक सुविधाएँ तथा आराम। और ऐसे धार्मिक सगठना का सदस्य बने रहना भी सभव है जो अपने सदस्या का इसी प्रकार विश्वासा पर टिकाये रखना चाहते ह।

ऐसे लोगा के लिए पारिवारिक जायदाद की तरह जीवन का आध्यात्मिक पहलू भी सस्कृति की विरासत म मिलता है। धम का अथ हमारे पूवजा का 'विश्वास' से कुछ भी ज्यादा नहीं है और सस्कृति का मतलब है केवल एक परपरा को आगे बढाते रहना। वे गिर्जाघर म उसी सौजन्य तथा सतोप के साथ जाते है जैसे कि सगीत-गोष्ठियो म, और उसी प्रकार नियमित रूप स वे अपराध-स्वीकृति (कफेशन) करते रहते है जसे कि वे स्नान करते है। उनम से जो कुछ ज्यादा आत्म-चेतन हैं वे धम का बस ही आनद लेते हैं जस कि अन्य प्राचीन वस्तुओ का—जो कि आदर की पात्र हैं अभी भी उपयोगी हैं, और पवित्र स्नेह दिखाने के लिए बडी सुदर हैं। लेकिन उनम से अधिकतर सास्कृतिक दृष्टि स आत्म

चेतन नहीं है वे अपने समय के जीवन म ऐसी उत्सुक्ता स भाग लेते हैं मानो इसके द्वारा वे परलोक म अनत जीवन के लिए सीधी तयारी कर रह हा। यह आवश्यक नहा कि वे अपने विचारा' म रूढिवादी हा, लेकिन वह यह मानकर चलते हैं, परमात्मा उनके मूल्या की रक्षा करता रहता है। बुराइया स वे खास तौर पर चौंकते हैं और आशा करते हैं कि वे दूर हो ही जायेंगी क्याकि व अपना नाश अपने आप करती रहती हैं। केवल अच्छाइया ही स्थायी हैं और युद्ध तथा अय तूफाना का पार करके वे बची रहती हैं। इसलिए जिस प्रकार उन व्यक्तिया के विश्वास स्थायी हैं उसी प्रकार उनके चच भी परम्परागत हैं। लेकिन इस परम्परा और स्थायित्व मे भी हाल म जा परिवतन आ गया है वह उन्हें मालूम नहीं है।

अमरीकी आबादी का मुख्य भाग ऐसे ही कल्पनाहीन आत्मसंतापी लोगा का है जा १९०० ई० से अब तक हुए परिवतना को केवल बाहरी और दिखावटी मानते हैं। अमरीका म प्रचलित आदे से ज्यादा धार्मिक रीति रिवाज और विचार इसी प्रकार के हैं। आकडा की दृष्टि से ये लाग औसत पर बठते हैं। समाजशास्त्री जिसे सास्कृतिक पिछडापन' कहते हैं ये उसके उदाहरण हैं क्याकि जिन घटनाआ म से ये गुजर रह हैं और जो आराम ये उठा रह हैं उन्हाने उस भौतिक परिवतन के अनुपात म मूल्या के भाव को नही बदला है। वतमान अय अभी आने वाले समय के सूचक नहीं बन पाये हैं और न नये तथ्या ने नये विचारा को ज म दिया है। इन हालता म धार्मिक परम्परावादिता या स्थिरता का वह अथ नहीं है जा कि आम सास्कृतिक स्थिरता के समय मे हाता। समाजशास्त्रिया ने बहुत ही सकुचित रूप म अपना ध्यान धार्मिक रीति रिवाज के इस ठास रूप पर केंद्रित किया है और इस प्रकार धम का व्यक्तिगत तथा सास्कृतिक स्थिरता देनेवाला कहा है। लेकिन आम नियम के तौर पर यह धम के बारे म उतना ही सही है जितना किसी अय सस्था के बारे मे। यह कहना अधिक सही हागा कि जो सास्कृतिक पिछडापन' सभी सस्थाआ म आ जाता है वह धम के इस रूप म प्रकट हो जाता है। यह धम सांख्यिकी की दृष्टि से भले ही औसत

पर हो, पर इसका मतलब यह नही कि धार्मिक दृष्टि से यह सामान्य या सही है।

अत मे हम आबादी के उस बडे भाग की ओर आते हैं जो धार्मिक दृष्टि से आत्म-सतुष्ट तो नहीं है पर अपनी बेचैनी को बडी पुरानी भाषा म प्रकट करता है। यह उग्र आधारवादियो का समूह है। आर्थिक दृष्टि से अशात आबादी स इसका कोई निकट सबध नहीं है और न ही अब तक राजनतिक उदारवाद, राजनतिक रूढिवाद या अन्य किसी धमनिरपेक्ष विचारधारा से इसका सम्बन्ध सिद्ध किया जा सका है। इसके सदस्यो को भी वे ही बौद्धिक तथा शक्षिक सीमाएँ हैं जिनका वणन हमने अभी किया है लेकिन वे न तो पूरी तरह अधिकार-वचित हैं और न पूरी तरह सुरक्षित ही। वे उन्नीसवी सदी के बचे-खुचे अवशेष हो ऐसी बात भी नहीं है। उग्र आधारवाद विरोध और जागृति का बीसवी सदी का आन्दोलन है। यह आधुनिक जीवन की आलोचना करता है पर साथ ही भविष्य के बारे मे शकित है।

बाइबिल इसाइयो की शुरू की पीढ़िया म आत्मा और शरीर के बीच द्वैत आमतौर पर स्वीकार किया जाता था और इस तथ्य को पारपरिक रूप मे लागू करते हुए ही वे बडे होते थे। इसलिए वे जानते थे कि कमे इस ससार म रहकर भी इससे अलग रहा जा सकता है। वे दो ससारो म रहते थे क्षणिक और शाश्वत इसलिए धार्मिक गभीरता सासारिक गभीरता स उतनी ही अलग थी जितना कि चच राज्य से। यहाँ कोई सघष नहीं था केवल द्वत था। लेकिन जब बीसवी सदी मे ससार आत्मा के क्षेत्र म प्रवेश करने लगा तो दोनो म अजीब घपला हो गया। उस हालत म उग्र और विरोधी बनना भी आवश्यक हो गया ताकि शरीर के मामलो और आत्मा की मुक्ति के बीच के सुपरिचित भेद को कायम रखा जा सके। उनका द्वत म विश्वास फिर स लाने का मतलब था कि स्वय धम को सजग होकर पवित्र किया जाय। इसलिए ये प्रतिक्रियावादी विश्वास मुख्य रूप से जिसके विरुद्ध लड रहे थे वह था स्वय आधुनिक या सासारिक धम।

संसार के साथ समझौता किये बैठे ईसाइयों को जो बात अनुचित प्रतीत होती थी वही उन्हें समझानी थी कि पुराना द्वैतवाद युक्तिसंगत होने के साथ साथ आधार रूप से सही भी था। स्वभावतः ऐसे संदेश की अपील ऐसे वर्गों या समूहों को होनी थी जो कि सांसारिक या आत्मिक कारणों से तात्कालीन प्रवाह से असंतुष्ट हो गये थे। विश्व-संघर्ष और महायुद्ध के युग से पहले ऐसे संदेश बहुत प्रिय नहीं थे। अगर थोड़ा बहुत आकर्षण उनमें था तो वह जन नेताओं द्वारा की गयी धर्म के बढ़ते हुए प्रभाव की आलोचना के कारण था। लेकिन जब आधुनिकता के मुख्य रूप में महायुद्ध और पूंजीवाद सामने आये और जब आधुनिक ज्ञान ज्यादा और ज्यादा तकनीकी हो गया तो ये आधारवादी चर्च दिन दूने रात चौगुने बढ़ने लगे। ये खासकर उन वर्गों और इलाकों में बढ़े जिनका विश्वास था कि नियात्मक कार्यक्रम के रूप में आत्मा की मुक्ति को आधुनिक संसार के मामलों से बिल्कुल अलग किया जा सकता है। यह धार्मिक अलगाव अवश्य ही प्रतिक्रियावादी है, लेकिन साथ-साथ यह विरोध का सक्रिय आंदोलन भी है। धार्मिक और सामाजिक मामलों के इस अलगाव को ग्यारहवें पोप ने व्यंग्य में 'सामाजिक आधुनिकतावाद' कहा था, क्योंकि इसके अनुसार पादरियों की सहायता लिए बिना भी सांसारिक मामले भली प्रकार चल सकते थे। साथ ही यह सच है कि बीसवीं सदी में यह विचार धारा उदारवाद का ही एक रूप थी। लेकिन तब यह निंदनीय समझे जाने वाले सामाजिक सुधार और सामाजिक व्यवस्था से बच निकलने का एक उपाय बन गयी। इसलिए उनके विद्रोही स्वरूप और पैगंबरी मिशन को समझने के लिए हम उनकी सैद्धांतिक तथा पुस्तकीय सतह के नीचे झांकना पड़ेगा।

रोमन तथा ऐंग्लिकन कैथोलिक चर्चों का परम्परावादी आधारवाद बिल्कुल दूसरे ही प्रकार का है। इन चर्चों में बाह्य रूप या विश्वास की स्थिरता तथा व्यवहार की आधुनिकता में एक स्वनिर्मित अन्तर रखा जाता है। चर्च प्रशासन के ये अधिकारवादी रूप प्रजातंत्रीय राजनीति तथा आर्थिक खींच-तनाव में उत्सुकता से भाग ले रहे हैं। [illegible]

अमरीका म वग चेतनता नहो है अपने विचारा म वे न तो रुढिवादी ही है और न समाजवादी । आधुनिक प्रोटस्टेंट की तरह क्थोलिक भी मध्यमवग क विचार प्रकाशन का शक्तिशाली साधन बन गये है तथा अम रीकी समाज म सतुलन किये हुए हैं। लकिन प्रोटेस्टेंट उदारवादियो के विपरीत वे आज भी वही जा कि वे अब तक रहे हैं। यहा भी हम यह जानने के लिए कि य चच समकालीन समाज के सघप म किस प्रकार अपना *भाग अदा कर रहे है ऊपरी सतह के औपचारिक रूप तथा अधिकारवाद* के नीचे झांकना पडेगा । उदाहरण के लिए जब कम्ब्रिज मसाचूसट के सट बर्नेडिक्ट के केंद्र म फादर लियोनाड फी ने तथा उनके कुछ साथियो ने फडामेंटलिस्ट सिद्धात आदोलन चलाना चाहा तो उन्ह ऊपर से यह कहकर दबा दिया गया कि इससे हठधर्मिता को प्रोत्साहन मिलेगा । यहाँ अधिकारवाद ने स्पष्ट कर दिया कि वह अपनी सत्ता का आसानी से भुला दिया जाना नहा चाहता ।

धर्म की बाहरी सम्पन्नता

यह ता स्पष्ट है कि बहुत से अग्रणी इतिहासकारा तथा समाजशास्त्रिया न इस सदी क प्रारम म जो कुछ कहा था उसके विपरीत, १९०० ई० स अब तक अमरीका म धम का ह्रास नहीं हुआ है। १८०० ई० म कुल प्रौढ आबादी के लगभग दस प्रतिशत लोग ही चच के सदस्य थे, और शायद इनम स भी तीस प्रतिशत ही नियमित रूप से चच जाते थे । उन्नीसवी सदी म बढते बढते चच के सदस्यो की सख्या १९०० ई० म पचास प्रतिशत हो गयी और अब कम स-कम पचपन प्रतिशत व्यक्ति सदस्य है। इनके अतिरिक्त पच्चीस स तीस प्रतिशत ऐसे भी हैं जो समझते हैं कि उनका किसी-न किसी धार्मिक परम्परा स सबध है और जो व्यक्तिगत रूप म अस्पष्ट प्रकार स धार्मिक माने जा सकते हैं। दस प्रतिशत आबादी से कुछ ही ज्यादा ऐसी है जो धम स अपना किसी प्रकार का सबध स्वीकार नहीं करती। ये आकडे हालांकि बहुत सही नहा हैं पर एक सुपरिचित तथ्य की ओर सकेत करते हैं कि

हालांकि धर्म कभी भी धार्मिक संस्थाओं में सक्रिय भाग लेने तक सीमित नहीं रहा, फिर भी उन्नीसवीं सदी के प्रारंभ के बजाय आज अमरीका में धर्म अधिक सम्मानित है। आम तौर पर सभी मुख्य अमरीकी धर्म फिर से नया जीवन प्राप्त कर रहे हैं और धार्मिक नेताओं को अपने मत के बचाव की चिंता उतनी नहीं है जितना कि एक पीढ़ी पहले थी। लेकिन इस घटना को धर्म का पुनर्जीवन मानने से जो कुछ हो चुका है उसके प्रति नासमझी ही जाहिर होगी। धर्म आगे बढ़ आया है या कम-से-कम सामने तो आ गया है। इसने वस्तुतः ऐसी चीजें छोड़ दी हैं जिन्हें वह पचास साल पहले पकड़े हुए था और जिन चीजों से हम अब भी प्यार है उन्हें इसने नये अर्थ दिये हैं। कड़वे अनुभवों ने इसे सजादा बनाया है कम आशावादी लेकिन ज्यादा शक्तिशाली। यदि यह एक संकट पार कर सका है तो इसीलिए कि इसके पास पर्याप्त समय तथा आम अमरीकी जीवन में हो रहे पुनर्निर्माण के प्रसंग में अपना पुनर्निर्माण कर लेने की शक्ति है।

स्वभावतः अब तक हुए पुनर्निर्माण की मात्रा से धार्मिक नेता असंतुष्ट हैं और वे स्वयं ही इसकी सबसे तीखी आलोचना कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, यह मिशन के क्षेत्र के एक प्रसिद्ध कार्यकर्त्ता, डा० हरमैन मल्सन मोस ने इस प्रकार लिखा है:

एक संस्था के रूप में धर्म बढ़ तो रहा है पर पहले से धीमी गति से इसकी बढ़ती हुई सदस्यता का प्रभाव चर्च न जाने वाले लोगों पर काफी नहीं पड़ रहा है। संस्था के रूप में यह शहर तथा खुले देहात दोनों में ही सबसे कमजोर है। स्कूल से भी बढ़कर इसके संगठन, क्रियाविधि और दृष्टिकोणों पर उन्नीसवीं सदी की कृषिप्रधान सभ्यता की छाप है। और स्कूल से भी बढ़कर यह ऐसे नेतृत्व पर निर्भर है जिसे प्रशिक्षण तथा सहायता दोनों ही कम मिले हैं। मूलरूप में यह एक अव्यवसायी कार्य ही है। सौ वर्षों में हुए हर सामाजिक परिवर्तन ने इसके महत्त्वपूर्ण क्षेत्र पर प्रभाव डाला है और स्वयं इसका प्रभाव पड़ना बहुत कठिन बना दिया है। अपनी अलग-अलग इकाइयों की स्थापना और व्यवस्था में यह समाज

मे हुए भारी परिवतनो को लागू करने का आजतक विरोध करता रहा है, और आज भी कर रहा है।

डा० आर० ए० धारमरहौन ने इस आलोचना का इस प्रकार विस्तार किया है

विधि विधान, साम्प्रदायिक राजनीति तथा विभिन्न मतो के बीच दीवार खींचने आदि पर बल देने के कारण चच आज की आगे बढती हुई सस्कृति से अलग जा पडा है। एक औसत दर्जे का पादरी आज की कला, सगीत और साहित्य की सराहना से ऐसे दूर है मानो वे किसी और नक्षत्र पर हो। वह चच कहाँ है जो नये स्थापत्य के एक अधिक साहसपूर्ण रूप मे अपने को अभिव्यक्त करे, या जो आधुनिक कविता के विद्रोह को काबू मे ला सके ? एक धमगुरु के लिए नेता होना कठिन है जबतक कि वह उस क्षेत्र मे सामने की पक्ति मे न आजाय। हमारी सस्कृति के सोये पड़े हुए अनगिनत मूल्यो को अभी धम ने छुआ भी नहीं है, लेकिन धमनिरपेक्षता पर उसका उन्मत्त आक्रमण बदस्तूर जारी है। यह अविश्वसनीय तो है ही, पर उससे भी बढ़कर यह दु खद है।

बीसवीं सदी की धम निरपेक्षता का कारण यह है कि हमे धम में वसी समृद्ध मान्यताएँ नहीं मिलतीं जसी कि मध्ययुगीन लोगो को या प्यूरिटन को प्राप्त थीं। उनका क्षेत्र धम तक ही सीमित था किन्तु हमारा नहीं। विज्ञान, कला, साहित्य और नाटक, सभी से हमे जीवन की महत्त्वपूण गहराइयों का भाव मिलता है। यह एक ऐसा काम है जो पहले केवल धम किया करता था।

धमनिरपेक्षता और प्रकृतिवाद की समस्या को सुलझाने का एकमात्र रास्ता उनके बीच मे से होकर है न कि उनके बाहर बाहर। जब बिना निवायत या मजबूरी का अनुभव किये एक बार यह यात्रा कर ली जायगी तो उस होए का डर नहीं रहेगा। प्रोफेसर लिमान के शब्दो में, "हम भूतकाल के धम को अपरिवर्तित रूप मे लाने की आवश्यकता नहीं है, और नहीं हमें किसी ऐसे नये धम की आवश्यकता है जिसके आदि अन्त

का ही कुछ पता न हो। जिस बात की आवश्यक्ता है वह यह है कि हम कुछ नई चीजों को पवित्र मानें, आदर के नये विषय बनायें, और परमात्मा के साथ नये सम्बन्धों से साहचय स्थापित करें।"

इस प्रकार की अपनी आलोचना कोई कमजोरी की निशानी नहीं थी, लेकिन क्योंकि यह इस सदी के अधकारपूर्ण तीसरे दशक में आया इसने एक ऐसे आक्रमण की शुरुआत कर दी जो तब से लगातार बढ़ता चला आ रहा है।

धार्मिक सगठनों की वृद्धि किस दिशा में हो रही इस बारे में सही आकड़े पा सकना कठिन है। प्रतिशत के हिसाब से यदि वृद्धि नापी जाय तो उसमें छोटे-छोटे अधिकतर फन्डामेंटलिस्ट चर्चों का बहुत महत्त्व मिल जाता है। सदस्यता के आकड़ों की आपस में तुलना नहीं हो सकती क्योंकि कुछ समुदाय (जैसे रामन कैथोलिक) सदस्यता जन्म (या बपतिस्मा) से गिनते हैं, जब कि कुछ दूसरे केवल प्रौढ़ों की ही सदस्यता मानते हैं। यहूदी आबादी को प्रार्थना-स्थान की सभा में सक्रिय भाग लेने वालों की सख्या के साथ सही-सही अनुपात निकालना भी असभव है। प्रदर्शित सामग्री स० १ में एक ग्राफ दिखाया गया है जो बताता है कि मुख्य-मुख्य धार्मिक सगठन एक दूसरे के अनुपात में तथा आबादी की वृद्धि के अनुपात में किस प्रकार बढ़े हैं। इस ग्राफ से यह बात प्रकट होती है कि परिमाणात्मक रूप से पारस्परिक अनुपात में कोई बहुत बड़ा परिवर्तन नहीं हुआ है यद्यपि छोटे-छोटे सगठनों के अपने अदर काफी परिवर्तन हो गये हैं। आमतौर पर धार्मिक सगठन पहले के ही अनुपात में हैं और आबादी की वृद्धि के साथ-साथ कुछ बढ़ गये हैं। प्राप्त आँकड़ों के और गहरे अध्ययन से पता चलेगा कि उत्तर-पश्चिम तथा दक्षिण-पूर्व में, अर्थात् आमतौर पर देहाती इलाकों में चर्चों की सख्या में काफी वृद्धि हुई है। इसका कुछ सबंध तो उन बातों से है जिन पर इस अध्याय में हम विचार करते आ रहे हैं। इससे शायद यह सिद्ध नहीं होता कि इन इलाकों में पहले के बजाय अब धर्म में ज्यादा रुचि है लेकिन यह अवश्य प्रकट होता है कि आवागमन के साधनों

मे आधुनिक सुधारा के होने पर किसान इस योग्य हो गये हैं कि व दूरस्थित गिर्जाघरा म जा सकें तथा उन्हे अपना सहयोग द सकें।

पहले से बहुत सुधरी हुई सडको पर दौडती हुई कारों, ट्रकों और बसों ने ग्रामीण समाज की सीमाओ को बहुत बढा दिया है। गाव अब ग्रामीण अमरीका की राजधानी सा बन गया है, स्कूल पहले से अधिक सुदढ हो गये हैं, किसान का बाहरी ससार से सम्पक कई गुना अधिक हो गया है विभिन्न सगठना तथा समहा की सभाए पहले से कहीं ज्यादा होने लगी हैं, और रेडियो के साथ इन सब चीजो ने मिलकर ग्रामीण जीवन के अलगाव को लगभग खत्म ही कर दिया है। इन परिवतनो का असर चच ने पर भी पडा है। खुले देहात के ऐसे हजारो चच खत्म हो गये जिनकी सदस्य-सख्या ५० से भी कम थी और जो उस समय के लिए ही उपयुक्त थे जब समाज छोटे छोटे समूहा मे रहता था। गाँव के चच मे किसाना की सदस्यता का अनुपात १९४० तक ४० प्रतिशत था, जिससे ज्यादा यह कभी नहीं हुआ।

चर्चों का विल्मिंग्टन कौंसिल की देखरेख म एक टिपिकल पूर्वी शहर विल्मिंग्टन डेलावेयर म किये गये अभी हाल के सर्वेक्षण म भी कोई ज्यादा चौंकानेवाले परिणाम सामने नही आये ३७ प्रतिशत आबादी रोमन कैथोलिक है २७ प्रतिशत प्रोटेस्टेंट ३ प्रतिशत यहूदी शेष ३३ प्रतिशत ऐसे हैं जिनका किसी धार्मिक सगठन से सबध नही है। प्रोटेस्टेंटो मे से (जिनम तीन चौथाई मेथोडिस्ट प्रेस्बिटेरियन या एपिस्को पेलियन हैं) केवल तीन बटा आठ सदस्य किसी आम इतवार को चच जाते हैं। रविवासरीय स्कूल की सम्पूर्ण चच की सदस्यता का पचपन प्रतिशत है और रविवासरीय स्कूल म उपस्थिति चच की उपस्थिति से कुछ अधिक होती है। एक तिहाई सदस्यता उपनगरा के लोगा की है। और अध्ययना से पता चलता है कि विकेंद्रीकरण की ओर कुछ-कुछ प्रवत्ति है तथा उपनगराय तथा आसपास के ग्रामीण चर्चों के बजाय शहरी चर्चों म सदस्यता धीमी गति म बढ रही है।

सामाजिक समस्याओ और सामाजिक दष्टिकोणो पर धार्मिक समुदायो म जो अतर पाया जाता है उसे जन मत-सग्रह की विधि स नापने के एक प्रयत्न का विवरण परिशिष्ट मे दिया गया है। इस प्रयत्न के परिणाम १९४० ४५ म उसी प्रकार से प्राप्त किये गये परिणामो से बहुत भिन्न हैं। इन परिणामो के आधार पर ही 'धम तथा वग रचना' के कुशल अध्येता लिस्टन पोप को भी इस परिणाम पर पहुँचना पडा कि चर्चों की सामाजिक स्थिति मे पिछले दशक मे उससे कही ज्यादा अतर हुए जितना कि आम तौर पर माना जाता था।

लेकिन धम म हुए बहुत-से महत्त्वपूण परिवतनो को नापा नही गया है, उनमे से अधिकतर को शायद नापा भी नहा जा सकता। जो भी हो, अगले अध्याय, जिनमे कि धार्मिक पुर्नानिर्माण के विभिन्न पहलुओ का वणन किया गया है, एक वैज्ञानिक रिपोट के स्तर तक नही पहुँच सकेंगे। अपयाप्त साक्षी के आधार पर भी सामान्य नियम निकालने पडेंगे और व्यक्तिगत प्रभाव के आधार पर ही कई जगह मूल्य निर्धारित करने पडेंगे।

सस्थागत पुनर्निर्माण

धार्मिक सस्थाओ का विभेदीकरण

हमारी सामाजिक क्रांति द्वारा धम के अन्दर किये जाने वाले क्रांति कारी परिवतन ऐसे आदमी को तो स्पष्ट दिखते हैं जो धम को अदर से देखता है लेकिन जो धार्मिक सस्थाओ के केवल ऊपरी ढाचे पर निगाह डालता है उस व दिखाई नही देते। आंकडो के द्वारा कम से कम ऐसे आंकडो के द्वारा जो प्राप्त है वे परिवतन नही दिखाये जा सकते। सबसे अधिक सदस्यता वाले चच सबसे अधिक स्थिर भी होते हैं और जहाँ तक सदस्यता का प्रश्न है, जनसख्या म वद्धि के अनुपात से थोडा आगे ही रहते है। धार्मिक सस्थाओ मे जानेवाली जनसख्या का प्रतिशत बीसवी सदी म उतना नही बदला जितना उन्नीसवी म। और उन आशकाओ और भविष्यवाणियो के बावजूद जो प्रेस मे बार बार निकलती रहती हैं प्राटस्टेंट कैथोलिक और यहूदियो के प्रति शत म भी कोई खास परिवतन नही हुआ है। इनके किनारे पर कुछ आक स्मिक तथा नयी शाखाएँ भी हैं। इन पचास सालो म दो नये धर्मों के सदस्य शाखा की सख्या म बने है और वे दोनो असाधारण रूप से स्थिर हो गये हैं। व हैं दि चच ऑफ जीसस क्राइस्ट आफ लेटर ड सेंटस (दि मामन्स) और दी चच ऑफ क्राइस्ट साइटिस्ट (क्रिश्चियन साइस)। मामन वे लोग है जिन्ह इजराइलियो की तरह गर मामन लोगो के बीच अपनी इच्छा के विरुद्ध रहने को बाध्य होना पडा है। उनका चच पूरे अर्थों म एक चच—अर्थात एक विशिष्ट सस्कृति के आत्मिक जीवन और उत्तराधिकार का प्रकट रूप है। दूसरी ओर क्रिश्चियन साइटिस्ट व लोग हैं जिन्ह जमन समाजशास्त्री एक सम्प्रदाय कहकर पुकारेंगे। उनका चच उनके लिए एक

विशेष काम करता है—और वह है उन्हें एक विशेष प्रकार का मानसिक स्वास्थ्य देना। वैसे वे अलग दिखनेवाले लोग नहीं हैं और व्यवहार में उनके धर्म का उनकी नागरिकता से कोई संबंध नहीं है। इन दोनों धार्मिक संस्थाओं को अपना दिव्य ज्ञान उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्ध में प्राप्त हुआ था और तब से और अधिक प्रेरणा का वे रक्त ही आये हैं। हालांकि छोटे-मोटे भेद उनमें होते रहे हैं फिर भी ये चर्च सुस्पष्ट रूढ़िवादी संगठन बन गये हैं, और शायद अमरीकी धार्मिक संस्थाओं में वे ही सबसे अधिक कठोर हैं। अब वे आंदोलन नहीं रहे हैं।

अमरीकी वातावरण में चर्च और सम्प्रदाय (सेक्ट) में यह समाज शास्त्रीय विभेद अधिक उपयोगी नहीं बैठता, क्योंकि राष्ट्रीय चर्च के दृष्टिकोण से सभी चर्च सम्प्रदाय ही हैं यूरोपीय राष्ट्रीयताओं पर आधारित चर्च भी तेजी से साथ अपना मौलिक स्वरूप खोते जा रहे हैं। मामन, आर्थोडाक्स ज्यू और कुछ छोटे-छोटे धार्मिक समुदाय धार्मिक रूप से संगठित हैं लेकिन अमरीका की शेष सभी धार्मिक संस्थाएँ जिनमें रोमन कैथोलिक भी शामिल है, न तो राष्ट्रीय चर्च हैं और न सम्प्रदाय हो। उन्हें आमतौर पर 'डिनामिनेशन' या 'कम्यूनियन' कहा जाता है जिनमें से हरेक एक धार्मिक संघ में ऐसे लोगों को इकट्ठा करता है जो और तरह विभिन्न समुदायों के होते हैं। ये सब संगठन मिलकर अमरीकी लोगों का धार्मिक जीवन प्रकट करते हैं लेकिन उनमें से कोई भी किसी विशिष्ट संस्कृति या श्रेणी का प्रतिनिधि नहीं कहा जा सकता। अमरीकी लोगों के लिए तो धार्मिक मत या 'डिनामिनेशन' और धार्मिक आंदोलन के बीच का भेद अधिक महत्त्व का है। एक धार्मिक मत का रूप स्थिर संस्था का होता है। उसका अपना उत्तराधिकार होता है जिसे वह बहुत प्रिय मानता है एक शासन होता है जो कि इसकी श्रद्धा को संगठित रूप में प्रकट करता है और होता है ऐसे सम्प्रदाय का समूह जिसके वक्तव्य और मूल्य आमतौर से पहचाने जा सकते हैं। अधिकांश आन्दोलनों की परिणति संस्थाओं में हो जाती है बस ही जैसे कि अधिकांश विश्वास मत बन जाते हैं। एक आन्दोलन को तब

खतरा हो जाता है जब वह किसी सगठन का निर्माण नही करता और एक सगठन का तब खतरा हो जाता है जब वह एक आदोलन नही रहता।

इस अतर को लागू करते हुए हम उन धार्मिक समूहो पर ध्यान दे सकते हैं जिन्होने, उन दो के समान जिनका वणन ऊपर किया गया है अपनी मुख्य प्रेरणा पिछली शताब्दी मे प्राप्त की थी और जो अब उतार पर हैं। उदाहरण के लिए उन्नीसवी शताब्दी म आत्मिकता एक जबदस्त आदोलन थी और वतमान शताब्दी के प्रारभ के दो दशको म भी इसकी शिविर-सभाओ और बठको म कुछ जीवन था। लेकिन आज तो अध्यात्मवादी चच उस आदोलन के अवशेषमात्र है।

१९०६ की जनगणना म गिनाय गए बीस से अधिक धार्मिक सगठन पूरी तरह लुप्त हो गये हैं। थियोसोफी के बारे म सयुक्त राज्य के १९३६ के जनगणना अधिकारियो ने कहा था थियोसोफिकल सोसाइटी — 'इन सगठनो के स्वरूप की वजह से निश्चय किया गया कि इन्हे अब धार्मिक सम्प्रदाय नही माना जायगा और न जनगणना म इनकी इस रूप मे गिनती ही की जायगी समवत यह निणय थियोसोफिक साहित्य म पाये जाने वाले कुछ ऐसे कथनो पर आधारित था थियोसोफी कोई नया धम विधान या दशन नही है न इसका किसी विश्व धम के आधारभूत सत्यो म कोई विरोध है। यह तो एक सावभौम सिद्धात है (थियोसोफिकल यूनिवर्सिटी प्रेस कलिफोर्निया क प्रकाशक की घोषणा)। लकिन थियोसोफिस्ट लोगो द्वारा सदा ही ऐसी बातें कही जाती रही है और इनसे इस आदोलन के धार्मिक न रहने की प्रवृत्ति का कोई सकेत नही मिलता। इन लोगो के दो वग हैं एक ओर वे है जो इसके शिक्षित रूप थियोसोफिकल यूनिवर्सिटी' पर बल देना चाहते हैं दूसरी ओर वे हैं जिनकी रुचि धम और उसके विधि विधानो म अधिक है।

ह्रास की ओर इस प्रवत्ति के बाद भी लोगो म अधिक नये सगठन सामने आये हैं। वामवी शती क मा अपन आदोलन रहे हैं। उनम स कई अस्थायी थे पर अनक ने स्थायी सगठनो को जन्म दिया है।

ऐसे आदोलन साम्प्रदायिक हो भी सकते हैं और नही भी, लेकिन समकालीन धार्मिक आदोलन म उनका बराबर महत्त्व है फिर चाहे वे क्षणस्थायी हो या फिर नये सगठना को जन्म दें। वे धार्मिक उभार के रूप हैं और इसलिए अगले अध्याया म हम उन पर उचित ध्यान देना चाहिए।

यहा हमे सस्थागत विभेदीकरण के एक और रूप की ओर ध्यान देना है जिसके अदर इसके जारी रहने की दशा मे धार्मिक सगठना की रचना म एक क्राति लाने की क्षमता है। सयुक्त राज्य की जनगणना म गिनाये गए सगठन आमतौर से मत हैं—ऐसे सगठन जिनका मुख्य उद्देश्य (जनगणना अधिकारी और स्वय उनकी राय म) पूजा या दवी सेवा है। उनका केद्र उन इमारता मे होता है जिन्ह सदिया से मदिर, चच ईश्वर का घर, मठ आदि कहा जाता रहा है। लेकिन हमारी शताब्दी म ऐस अनेक धार्मिक समाज सामने आये हैं जिनके भवन आदि चच की इमारता के बजाय बडे व्यापार की इमारता से ज्यादा मिलते हैं। उनम से कइया को तो कहा ही स्टोर फ्रट चच' जाता है। व कम और धार्मिक श्रम के लिए बनाये गये सगठन है। ईसाई चर्चों के पारपरिक ढाचे के भीतर भी न्यू इगलैन्ड मीटिंग हाउस' और 'सोसायटी आफ फ्रेंडस' आदि नामा म विधि विधाना से मुक्त धार्मिक सगठना की झलक मिलने लगी थी। पिछली दशाब्दी म अमरीकी धार्मिक सगठना का काम इतना विशिष्ट, सगठित और व्यावहारिक हो गया है कि धम का जीवन ही पूजा स सवा और वेदी से दफ्तर की आर जाता हुआ मालूम पडने लगा है। इस शताब्दी के प्रारभ म भी एक दूरदर्शी धम विचारक द्वारा इस विभेदीकरण का आभास दिया गया था और उसने भविष्यवाणी स पूर्ण एक अनुच्छेद भी इस सबध म लिखा था जिसे हम आगे द रहे हैं (देखें प्रदर्शित सामग्री सख्या २)।

आया ये सभी गतिविधिया धार्मिक हैं या नही यह तो एक सैद्धातिक विवाद है क्याकि निश्चित रूप स कोइ भी नही बता सकता कि व्यापार कहाँ समाप्त होता है और धम कहाँ प्रारभ अथवा किस स्थान पर राजनीति राज्य की युद्धनीति' बन जाती है। अभी तो हमारे लिए चर्चों और मन्दिरा

के अदर या उनके सहारे बनी हुई बहुत प्रमुख धार्मिक सस्थाओ का वर्गी करण कर देना ही काफी है।

१ एक पूर्ण तथा आधुनिक शहर के सस्थागत चर्चों म शिक्षा देने के लिए स्टाफ मनोरजन की सुविधाएँ, क्लब के कक्ष और रसोईघर, व्याव सायिक सामाजिक सेवा, मानसिक चिकित्सा सबधी सलाह और रोज गार दिलाने की सेवा आदि की सुविधा होती है।

२ स्टोर फ्रट चच और गौस्पल टवरनेक्ल (धर्मोपदेश शिविर) इसके बिल्कुल विपरीत हैं। ये प्रचार करने सात्वना देने या तत्काल दान आदि देने के लिए मिशन के स्थान हैं। कभी-कभी चर्चों द्वारा इन्हे आर्थिक सहायता दी जाती है लेकिन अब तो बडे शहरो मे अपने आप ही सगठन, पूँजी या स्थायित्व के बिना इनकी गिनती बढ़ती जा रही है।

३ ईसाई समुदायो म सामुदायिक केंद्रो की सहायता सामुदायिक या केंद्रीय चर्चों द्वारा की जाती है। ऐसे तीन हजार स्वायत्त केंद्र हैं जिनकी सदस्य सख्या १० लाख है। यहूदी समुदायो म ऐसे केंद्रो की सहायता यहूदी धम की विभिन्न शाखाओ द्वारा की जाती है।

४ मिशन, सामाजिक काम शिक्षा धर्मोपदेश और विस्थापित व्यक्तियो के पुनर्वास के केंद्रीय कायक्रम के लिए अब चच-बोर्ड और प्रशास-निक मडलो को अधिक सगठित तथा सुदृढ कर दिया गया है।

५ मित्रता मनोरजन धार्मिक शिक्षा और मिशन की गतिविधियो के लिए बनाये गए युवक-सगठनो ने धार्मिक काय को चच की गतिविधियो से बहुत आगे पहुँचा दिया है। वाई० एम० सी० ए० वाई० डब्ल्यू० सी० ए०, वाई० एम० एच० ए० वाई० डब्ल्यू० एच० ए० क्रिश्चियन एडी वर सोसायटी और स्टुडेंट वालटरी मूवमेंट आदि सगठन मलो के बाहर रहकर ही बनाये गए थे।

६ धार्मिक सगठनो के शिक्षा सबधी काय म अब शिक्षा के सभी रूप आते हैं जिनम प्राथमिक शिक्षा और रविवासरीय विद्यालय कालिज और विश्वविद्यालय तक की शिक्षा धमदर्शन सबधी विचार-गोष्ठियाँ